MT

Seat No. | | | | | | | |

2018 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - I - PAPER - IV

Time : 3 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 100**

विभाग 1 - गद्य

उ.1.	**(क) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**	**(8)**
(1)	**(i) वाक्य पूर्ण कीजिए।**	**1**
	(1) उन दिनों को लेखक आज भी याद करते हैं **जो उन्होंने अपने बाबू जी के साथ बिताया था।**	
	(2) होड़ थी, हम भाइयों में **किसे कितना काम दिया जाता है और कौन उन्हें कितनी सफाई से करता है।**	
	(ii) कारण लिखिए।	**1**
	(1) क्योंकि लेखक के पिता जी उन्हें अपना निजी व्यक्तिगत काम सौंपते थे।	
	(2) क्योंकि फटा हुआ कुरता जाड़े के दिनों में काम आएगा और ऊपर से कोट पहन लिया जाएगा।	
(2)	**(i) वाक्यों का उचित क्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए।**	**2**
	(1) बाबू जी ने लेखक से अपना कमरा ठीक करने के लिए कहा।	
	(2) बाबू जी ने उनके कुरते के बारे में पूछा।	
	(3) बाबू जी ने कहा कि अब जाड़े के दिन शुरू होंगे।	
	(4) बाबू जी ऊपर से कोट पहन लेंगे।	
(3)	**(i) वचन बदलिए।**	**1**
	(1) कुरता - कुरते (2) कोट - कोट	
	(ii) परिच्छेद में प्रयुक्त उपसर्ग युक्त शब्द ढूँढ़कर लिखिए।	**1**
	(1) बेतरतीब : **उपसर्ग** : बे (2) अनुभव : **उपसर्ग** : अनु	
(4)	जी नहीं; लेखक के पिता कंजूस नहीं थे। वे मेहनत के पैसों का मोल जानते थे। ऊपर से खादी के कपड़े बनाने के लिए बुनकरों को बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए ऐसे कपड़ों का एक-एक सूत काम में आना चाहिए। लेखक के पिता आदर्शवादी थे। वे जानते थे कि देश में कई ऐसे लोग हैं जिन्हें तन ढँकने के लिए चिथड़ा भी नसीब नहीं होता। इसलिए वे कपड़ा फटने के बाद भी उसके रूमाल या अन्य कोई चीज बनाने के लिए घर के सदस्यों को कहते थे।	**2**

उ.1.	**(ख) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**	**(8)**
(1)	**(i) निम्नलिखित गलत वाक्य सही करके फिर से लिखिए।**	**1**
	(1) आँख माध्यम है और देखने वाला मन है।	
	(2) अमृतलाल नागर जी ने अखंड भारतवर्ष का भ्रमण किया है।	
	(ii) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों।	**1**
	(1) अमृतलाल जी के पिता अमृतलाल जी से बचपन में क्या याद करवाते थे ?	
	(2) बचपन में अमृतलाल जी को क्या घुट्टी में पिलाया गया था ?	
(2)	**(i) कृति पूर्ण कीजिए।**	
	(1) **नागर जी के प्रिय विदेशी लेखक** → टॉलस्टॉय, चेखव	**1**
	(2) **समकालीन लेखकों में से अमृतलाल जी के प्रिय लेखक** → रामविलास शर्मा, प्रभातकुमार मुखोपाध्याय	**1**
(3)	**(i) 'प्रतिक्रिया' शब्द में से उपसर्ग अलग कीजिए तथा अन्य दो शब्द बनाइए।**	**1**
	प्रतिक्रिया : उपसर्ग : प्रति **अन्य शब्द** : प्रतिघात, प्रतिपल	
	(ii) समानार्थी शब्द लिखिए।	**1**
	(1) शाम - संध्या (2) विवाद - झगड़ा	
(4)	ईश्वर ने मनुष्य को आँखें दी हैं जिससे मनुष्य देख सकता है। आँखें भले ही देखने का कार्य करती हैं पर वह सिर्फ बाह्य रूप से। बाह्य रूप से भी बढ़कर होती है, व्यक्ति की आंतरिक शक्ति जिसमें व्यक्ति का मन स्थित होता है। आंतरिक शक्ति से देखी गई वस्तु को व्यक्ति कभी भी नहीं भूल सकता है। इसलिए कहा भी गया है कि परमात्मा को देखने के लिए तन रूपी आँखों की नहीं, मनरूपी आँखों की जरूरत होती है। कवि सूरदास अंधे थे, फिर भी अपनी मन की आँखों से वे ईश्वर को देखते थे और उसे अपनी रचनाओं में साकार करते थे।	**2**

उ.1.	(ग) अपठित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :	(8)
(1)	(i) आकृति पूर्ण कीजिए।	1

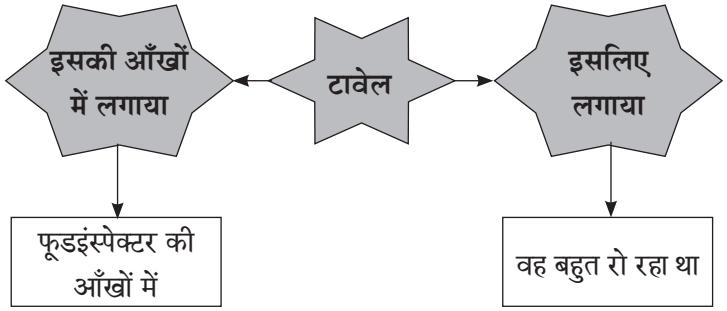

	(ii) समझकर लिखिए।	1
	(1) इन्होंने स्पीड पकड़ ली थी - **आँसुओं ने**	
	(2) इनके जैसा था फूडइंस्पेक्टर का रंग - **भगवान कृष्ण के जैसा**	
(2)	(i) उत्तर लिखिए।	1
	(i) फूडइंस्पेक्टर को।	
	(ii) क्योंकि वह अपनी नौकरी में खुश था।	
	(ii) सत्य या असत्य पहचानकर लिखिए।	1
	(1) सत्य	
	(2) असत्य	
(3)	(i) निम्नलिखित शब्द मानक वर्तनी के अनुसार लिखिए।	1
	(1) दिये - दिए (2) आंसुओ - आँसुओं	
	(ii) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायी शब्द लिखिए ।	1
	(1) निखालिस - शुद्ध (2) कनस्तर - टीन का पीपा	
(4)	मेहनत करने से गृहस्थी चलती है, भ्रष्टाचार करने से नहीं। भ्रष्टाचार करके कमाया हुआ पैसा कितने दिनों तक साथ देगा? ऐसा पैसा व्यक्ति को हजम नहीं हो सकता है। कोई गलत मार्ग से कमाए हुए पैसों से भले ही अपने परिवार को खुश रखने का प्रयास करता है परंतु वह अपने देश के साथ बेईमानी करता है। इस बात को उसे भूलना नहीं चाहिए। भले ही उसकी गृहस्थी भ्रष्टाचार के पैसों से ठीक-ठाक चलती रहे, फिर भी क्या उसे जीवन का सच्चा आनंद मिल सकता है? कदापि नहीं।	2

विभाग 2 - पद्य

उ.2. (च) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **(6)**

(1) (i) संजाल पूर्ण कीजिए। **2**

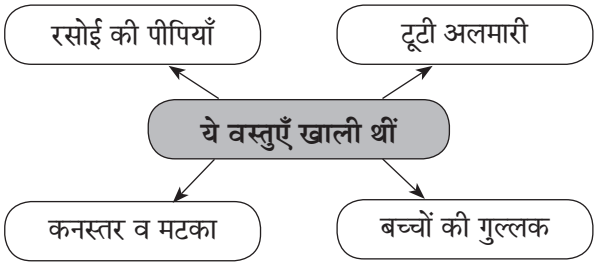

(ii) ऐसे प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों। **1**

(1) कवि के घर में क्या देखकर छापामारों का खिला हुआ चेहरा मुरझा गया ?

(2) छापामारों को घर की वस्तुओं में क्या मिला ?

(2) कृति पूर्ण कीजिए। **1**

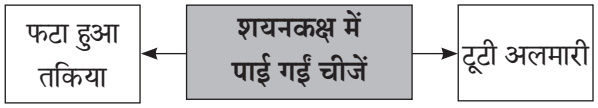

(3) निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए। **2**

'छापा' इस कविता के कवि श्री ओमप्रकाश हैं। उनके घर पर आयकर विभाग का बहुत बड़ा छापा पड़ा। कवि के घर पर आए आयकर विभाग के अधिकारियों ने कवि से उद्भ्रांत होकर पूछा, ''तुमने नोट कहाँ रखे हैं ?'' कवि ने तपाक से उत्तर दिया, ''मैं नोट परीक्षा के एक महीने पहले तैयार करता हूँ।'' अब उन्हें गुस्सा आया। उन्होंने गरजकर कहा, ''हम आपसे मुद्रा के बारे में पूछ रहे हैं और वह कहाँ है ?'' कवि ने भी लरजकर कहा, ''आप मुद्राओं को मेरे चेहरे पर देख सकते हो।''

उ.2. (छ) निम्न मुद्दों के आधार पर निम्न कविता का पद्य विश्लेषण कीजिए: **(6)**

(i) **समता की ओर**

(1) **कविता के कवि/रचनाकार का नाम** : कवि मुकुटधर पांडेय **1**

(2) **काव्य प्रकार** : छायावादी काव्य **1**

(3) **पसंदीदा पंक्ति** : हमको भाई का करना उपकार नहीं क्या होगा, **1**
भाई पर भाई का कुछ अधिकार नहीं क्या होगा।

(4) **पसंदीदा होने का कारण** : प्रस्तुत पंक्तियाँ समाज में अमीर भाइयों को गरीब भाइयों की भलाई के बारे में विचार करने के लिए प्रवृत्त करती है। इन पंक्तियों में समाज से अमीरी-गरीबी का भेदभाव दूर करके समता स्थापित करने की बात बताई गई है। इसलिए प्रस्तुत पंक्तियाँ मुझे बेहद पसंद हैं। **2**

	(5) **कविता से प्राप्त संदेश**: विश्व-बंधुत्व जैसी मानवीय भावना को अपनाकर एक-दूसरे के साथ बंधुत्व का व्यवहार करना।	1
	अथवा	
(ii)	**भारत महिमा**	
	(1) **रचनाकार का नाम** : जयशंकर प्रसाद	1
	(2) **रचना का प्रकार** : छायावादी आधुनिक काव्य	1
	(3) **पसंदीदा पंक्ति** : हिमालय के आँगन में उसे, किरणों का दे उपहार; उषा ने अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक हार।	1
	(4) **पसंदीदा होने का कारण** : सूर्योदय होने से कुछ पल पहले उषा रूपी किरणों का हिमालय के आँगन में आगमन हुआ। भारत देश में उदित होने वाली उषा अपने साथ सुनहरी किरणों को लेकर आई। मानो वह भारत का अभिनंदन कर उसे हीरों का हार पहना रही हो। इसमें कवि ने मानवीकरण अलंकार के माध्यम से भारत की प्राकृतिक सुषमा का जो मनोहारी वर्णन किया है, वह अद्‌भुत व अतुलनीय है। अत: यह पंक्तियाँ मुझे अत्यंत प्रिय हैं।	2
	(5) **रचना से प्राप्त संदेश** : इस कविता से हमें यह संदेश प्राप्त होता है कि हमें अपने अतीत के गौरवशाली इतिहास को कभी नहीं भूलना चाहिए। हमें अपने देश पर गर्व होना चाहिए और इस पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।	1
	अथवा	
(iii)	**अपनी गंध नही बेचूँगा**	
	(1) **रचनाकार का नाम**: बालकवि बैरागी	1
	(2) **रचना का प्रकार** : गीत	1
	(3) **पसंदीदा पंक्ति** : बिकने से बेहतर मर जाऊँ अपनी माटी में झर जाऊँ मन ने तन पर लगा दिया जो वो प्रतिबंध नहीं बेचूँगा।	1
	(4) **पसंदीदा होने का कारण**: उपर्युक्त पंक्ति में फूल अपने स्वाभिमान और सम्मान के लिए मर जाना और मरकर मिट्‌टी में झर जाना अधिक पसंद करता है। वह इस निर्णय पर किसी भी कीमत पर अडिग रहना चाहता है। यदि व्यक्ति में सम्मान और स्वाभिमान की भावना न हो तो उसका जीवन निरर्थक होता है।	2
	(5) **कविता से प्राप्त संदेश या प्रेरणा**: स्वाभिमान ही जीवन है। स्वाभिमान के बिना जीवन निरर्थक होता है। स्वाभिमान से व्यक्ति की सम्मान व प्रतिष्ठा बनी रहती है।	1

उ.2. (ज) अपठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **(6)**

(1) उत्तर लिखिए। **2**

(i) स्नेह (ii) प्यार

(2) आकृति में उत्तर लिखिए। **2**

(i) अच्छा प्रयत्न यही है - जो गिरे हुए को उठा सके।

(ii) यही अधोगति है - जो प्यार से किसी को उठा न पाए।

(3) पद्यांश की तीसरी और चौथी पंक्ति का संदेश लिखिए। **2**

कवि भवानी प्रसाद मिश्र प्रेम की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि प्रेम द्वारा असंभव कार्य को भी संभव किया जा सकता है। हमारे जीवन में यदि अंधकार और नकारात्मक भाव हो, तो प्रेम के द्वारा उसे प्रकाशित किया जा सकता है। सकारात्मकता का भाव जाग सकता है। उसी प्रकार बाहरी समाज में निहित द्वेष, ईर्ष्या व नकारात्मकता को प्रेम के द्वारा सद्मार्ग पर लाया जा सकता है। कवि के मतानुसार प्रेम जीवन में सरलता, सहृदयता व मानवता का प्रतीक है।

विभाग 3 - पूरक पठन

उ.3. (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए। **(4)**

(1) तालिका पूर्ण कीजिए। **2**

मेहमान मंडली की क्रियाएँ

- कोई खाकर ऊँगलियाँ चाट रहा था।
- कोई खाना खाने वालों की ओर तिरछी नजर से देख रहा था।
- कोई दही खाकर जीभ चटकारता था।
- कोई दही का दूसरा दोना माँगने में संकोच कर रहा था।

(2) बुजुर्ग समाज के लिए सांस्कृतिक विरासत की तरह होते हैं। हमें उनका आदर-सम्मान करना चाहिए। वे हमारे संरक्षक एवं मार्गदर्शक होते हैं। वे हमारे घर की धरोहर होते हैं। वे हमारे सच्चे पथ-प्रदर्शक होते हैं। उनकी बातों को सुनना चाहिए। बुजुर्गों की सीख हमारा भाग्य बदल सकती है। जब हम मुसीबत में फँस जाते हैं तब उससे बाहर निकलने के लिए वे ही हमारी मदद कर सकते हैं क्योंकि उनके पास जीवन का गहरा अनुभव होता है। हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम अपने घर के बुजुर्ग की सेवा करें। उनसे प्यार करें। उनका आदर सम्मान करें। वे बुजुर्ग हो गए हैं। इसलिए हमें उन्हें सँभालना है नहीं तो दुनिया हम पर हँसेगी; **2**

ऐसा सोचना उन पर दया दिखाने जैसा ही है। हमें अपने मन से इस प्रकार के विचारों को त्याग कर निष्ठा एवं अपनत्व की भावना से उनका ख्याल रखना चाहिए। हमारा कर्त्तव्य है कि हम उन्हें भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करें।

उ.3. (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **(4)**

(1) (i) वर्गीकरण कीजिए। **1**

ऐतिहासिक	पौराणिक
लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, चाँद बीबी, पद्मिनी, रजिया सुलताना	सावित्री, सीता

(ii) विशेषताओं के आधार पर पहचानिए। **1**

(1) रानी लक्ष्मीबाई (2) लड़का-लड़की (स्त्री-पुरुष)

(2) प्रत्येक स्त्री में रानी लक्ष्मीबाई होती है। नारी माँ दुर्गा का रूप होती है। वह सबला होती है। यदि उसके साथ कोई बदलसलूकी करने की कोशिश करे, तो वह चंडिका का रूप धारण कर लेती है। रानी लक्ष्मीबाई की तरह वह तुरंत अपने अस्तित्व व अस्मिता के लिए लड़ने-मरने को तैयार हो जाती है। संघर्ष करके समाज के साथ लड़ने की ताकत उसमें होती है। आज हमारे देश की नारी अंतरिक्ष में जा रही है। वह वैमानिक बनकर आसमान में उड़ रही है। वैज्ञानिक बनकर वह अनुसंधान कर रही है। राजनीतिज्ञ बनकर देश को चला रही है। भारत की भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के अद्‌भुत कार्य को कोई भूल नहीं सकता है। इसलिए कहा जाता है कि प्रत्येक स्त्री में रानी लक्ष्मीबाई होती है। **2**

विभाग 4 - व्याकरण

उ.4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **(18)**

(1) (i) निम्नलिखित वाक्य में आए हुए संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए। **1**

गाय : जातिवाचक संज्ञा **दूध** : द्रव्यवाचक संज्ञा

(ii) निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थानों में उचित सर्वनामों का प्रयोग कीजिए। **1**

हृदय **वही** है; **जो** उदार हो।

(2) (i) निम्नलिखित वाक्य में से अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए। **1**

के पास : संबंधसूचक अव्यय

(ii) नम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए। **1**

अच्छा! - विस्मयादिबोधक अव्यय

वाक्य - अच्छा! तो हम भी साथ चलते हैं।

(3) कालपरिवर्तन कीजिए।

(i) सातों तारे मंद पड़ जा रहे हैं। **1**

(ii) मैं खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कह रहा था। **1**

(4) **तालिका पूर्ण लिखिए ।** **2**

संधि	संधि-विच्छेद	भेद
निस्संदेह	नि: + संदेह	विसर्ग संधि
सदैव	सदा + एव	स्वर संधि

(5) (i) **अर्थ के आधार पर निम्न वाक्य के भेद पहचानिए।** **1**

सरल वाक्य

(ii) **सूचना के अनुसार निम्न वाक्य का प्रकार बदलिए** **1**

मैं आज रात भूखा रहूँगा।

(6) (i) **मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए।** **1**

टाँग अड़ाना : अड़ंगा डालना

वाक्य: यदि तुम मेरे काम में **टाँग अड़ाने** की कोशिश करोगे तो मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।

(ii) **निम्न वाक्य में अधोरेखांकित शब्द समूह के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए।** **1**

क्या आपने मेरी **इज्जत उतारने** के लिए यहाँ बुलाया था ?

(7) **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखिए।**

(i) सिरचन को कोई लड़के-बच्चे नहीं थे। **1**

(ii) लक्ष्मी की पूँछ झूब्बेदार थी। **1**

(8) **निम्न वाक्य में से मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए।** **1**

मुख्य क्रिया - लौटाना सहायक क्रिया - दी (देना)

(9) **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए।** **1**

अ.क्र	क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
(i)	भूलना	भुलाना	भुलवाना
(ii)	पीसना	पिसाना	पिसवाना

(10) **निम्नलिखित वाक्य में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कर वाक्य पुन: लिखिए।** **1**

''ठहरो, मैं माँ से जाकर कहती हूँ, इतनी बड़ी बात।''

(11) **निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारक चिह्नों से कीजिए और कारक का नाम लिखिए।** **1**

शरीर को कुछ समय **का** विश्राम मिल जाता है।

का - करण कारक संबंध कारक

विभाग 5 - रचना विभाग (32)

उ.5. (अ) **5**

(i) दिनांक - ५ मार्च, २०१८

सेवा में,

श्रीमान कोतवाल साहब,

शहर विभाग, कोल्हापुर।

विषय : सार्वजनिक गणेशोत्सव के समय ध्वनि प्रदूषण का शिकायत पत्र।

माननीय महोदय,

मैं दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। इस पत्र द्वारा मैं रिकॉर्ड बजने के कारण अध्ययन में पड़नेवाली बाधा की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

शहर में आजकल चारों तरफ गणेशोत्सव की धूम है। दिन-रात शहर में रिकार्ड बज रहे हैं। परीक्षा करीब है और पढ़ाई ठीक से नहीं हो पा रही है। आवाज़ इतनी तेज रहती है कि पढ़ने में मन नहीं लगता है। हम कई बार रिकार्ड बजानेवालों से शिकायत कर चुके हैं लेकिन उन्होंने हमारी बात पर ध्यान नहीं दिया। रिकार्ड बजाने की समय-सीमा निर्धारित होनी चाहिए, ताकि हम शांतिपूर्ण ढंग से अध्ययन कर सकें।

अत: आपसे प्रार्थना है कि विद्यार्थियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए उचित कार्यवाही करने की कृपा करें।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!

भवदीय,

करन वेद।

नाम : करन वेद

पता : बगीचा बिल्डिंग,
कोल्हापुर।

ई-मेल आईडी : karan123@gmail.com

अथवा

(ii) १० जनवरी, २०१८

प्रिय मित्र निकेतन,

सप्रेम नमस्ते।

निकेतन, तुम कैसे हो ? आशा करता हूँ कि तुम ठीक होगे। मैं भी यहाँ पर ठीक हूँ।

कल ही मैंने समाचार पत्र में पढ़ा कि तुम्हें जिला विज्ञान प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह समाचार पढ़कर मैं फूला न समाया। इसलिए तुम्हें हार्दिक बधाई देने के लिए मैं यह पत्र लिख रहा हूँ। तुम्हें विज्ञान में बेहद रूचि है। तुम हमेशा विज्ञान से संबंधित पुस्तकों का वाचन करते रहते हो। मुझे तुम पर बहुत गर्व महसूस हो रहा है। मुझे याद है, तुमने विज्ञान प्रदर्शनी के लिए मॉडल एवं प्रकल्प तैयार करने के लिए पिछले महीने से ही तैयारी शुरू कर दी थी। आखिर, तुम्हारी मेहनत रंग लाई और तुम्हें प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। तुम्हारे द्‌वारा निर्मित यह प्रकल्प तुम्हारी सृजनात्मकता एवं प्रतिभा की गवाही देता है। सचमुच, तुम मेरे मित्र हो, यह मेरे लिए बड़ी खुशी की बात है। मेरे परिवार वालों ने भी तुम्हें हार्दिक बधाई दी है।

और क्या लिखूँ? तुम्हारी प्रशंसा के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं है। जैसे ही ग्रीष्मावकाश शुरू हो जाएँ वैसे ही तुम मेरे घर पर रहने के लिए आ जाना। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा। अपनी माता जी एवं पिता जी को मेरा सादर प्रणाम कहना।

.....

कुमार संदेश जोशी
२०२, पारिजात,
नारायण मार्ग,
मुंबई ४०० ०२०.
kumarsandesh16@gmail.com

अथवा

(2) (i) श्री. सी. वी. रामन ने कौन-से क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का सिक्का देश-विदेश में जमा लिया था? **5**
(ii) ध्वनि के संबंध में कुछ प्रयोग कौन कर रहा था?
(iii) रामन का साथी अपनी कठिनाइयाँ लेकर किसके पास गया?
(iv) रामन का साथी जोन्स साहब के पास क्यों गया?
(v) रामन की प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा किसने की?

उ.6.

(1) **वृत्तांत लेखन ।** **5**

अपने विद्‌यालय में मनाए गए किसी समारोह का वृत्तांत

दिनांक १५ सितंबर २०१७ मुंबई: शारदा विद्‌यालय, मुंबई में दिनांक १४ सितंबर २०१७ के दिन सुबह ९:०० बजे बाल-दिवस के अवसर पर विद्‌यालय के सभी शिक्षकों एवं प्रधानाचार्य जी ने छात्रों को हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। सुबह ठीक ९ बजे विद्‌यालय के सभागार में समारोह की शुरुआत हुई। सर्वप्रथम प्रधानाचार्य श्री. राजेश शिंदे जी ने सभी छात्रों को संबोधित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। पश्चात विद्‌यालय की कुछ महिला अध्यापिकाओं ने नृत्य प्रस्तुत कर सभी छात्रों को मंत्रमुग्ध कर दिया। जैसे ही नृत्य खत्म हुआ वैसे ही छात्रों के लिए कई प्रकार के खेलों का आयोजन किया गया। खेल खेलते समय छात्रों का उत्साह देखने लायक था। सभी छात्रों ने बाल–दिवस के अवसर पर विद्‌यालय में उपस्थित सभी शिक्षकों को धन्यवाद दिए। इस प्रकार १ बजे समारोह खत्म हुआ।

(2) **निम्न मुद्दों के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए।** **5**

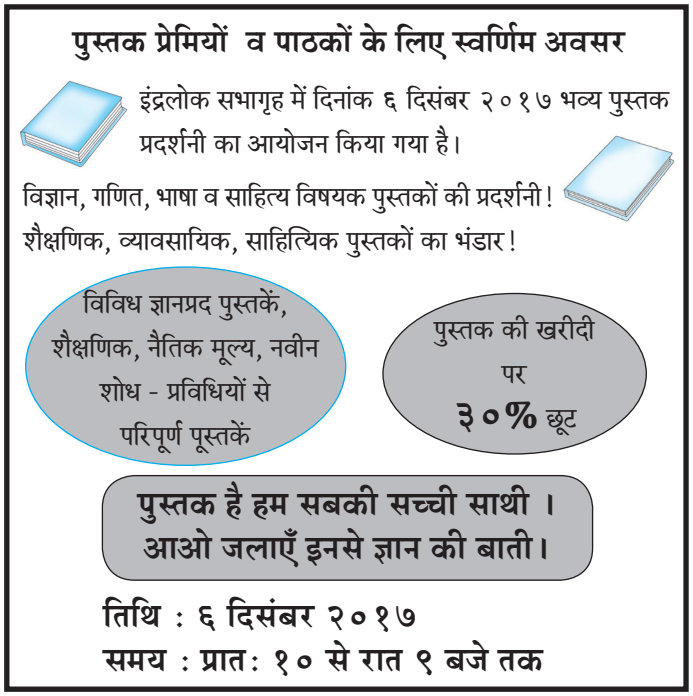

(3) **होशियार लड़कियाँ** **5**

चंद्रपुर नाम का एक छोटा-सा गाँव था। गाँव में रहने वाले सभी लोग बहुत ही सीधे-सादे थे। वे दिनभर अपने-अपने खेतों में काम करते और शाम को घर आकर खाना-पीना खाकर आराम करते। उन सभी की लड़कियाँ स्कूल जाती थीं। आश्चर्य की बात यह थी कि सभी लड़कियाँ पढ़ने में बहुत ही होशियार थीं। सारी की सारी लड़कियाँ समझदार भी थीं। पढ़ाई के अलावा ये सारी लड़कियाँ अपने-अपने घर का सारा काम भी करती थीं। वे खाना बनाने में माहिर थीं।

एक दिन उस गाँव पर संकट आया। गाँव में एक तालाब था। किसी कारणवश उस तालाब का सारा पानी सूख गया। इस कारण गाँव में पानी का अभाव निर्माण हुआ। लड़कियों को अब दूसरे गाँव में पैदल जाकर पानी लाना पड़ता था। इस कारण उन्हें पढ़ाई करने के लिए कम समय मिलता था।

एक दिन गाँव की सारी लड़कियाँ इस समस्या का उपाय ढूँढ़ने के लिए एकत्रित हुईं। उन्होंने आपस में चर्चा करके समस्या का उपाय ढूँढ़ निकाला। उन्होंने अपने माता-पिता को समझाया कि यदि हम सब मिलकर गाँव में कुआँ खुदवाएँ तो हम सबकी समस्या का निराकरण हो सकता है। सभी को अपनी-अपनी लड़कियों की बात सही लगी। सबने मिलकर गाँव में कुआँ खुदवाने का कार्य शुरू कर दिया। कुआँ चालीस फुट खोदा गया था और गाँव वाले उसे और गहराई तक खोदना चाहते थे। पर यह क्या! कुएँ में से झरने पानी के रूप में रिसने लगे। सभी गाँव वाले प्रसन्न हो गए और उन्होंने गाँव की सारी लड़कियों की तारीफ की।

सीख : कहानी से यह सीख मिलती है कि समस्या आने पर उसे सुलझाने के लिए उपाय ढूँढ़ने चाहिए। व्यक्ति को समस्या आने पर आलसी नहीं होना चाहिए।

अथवा

(4) (i) **'विश्व बंधुता-वर्तमान युग की माँग'** **7**

सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चित दुःखभाग्भवेत्।

इसका अर्थ यह है, दुनिया में सब सुखी व निरोगी रहें; सब भद्र देखें व कोई भी दुखी न हो। दुनिया के सभी लोगों को एक-दूसरे की भलाई के बारे में सदैव सोचना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को भाईचारे की भावना अपनानी चाहिए। हमारी भारतीय संस्कृति इसी विश्व बंधुत्व का संदेश देती है। विश्व बंधुत्व का सही अर्थ है, सबको भाई समझने का भाव। समस्त संसार के विकास के लिए विश्व बंधुत्व जरूरी है।

आज मनुष्य विनाश के कगार पर खड़ा है उसे अपने स्वार्थों ने जकड़ लिया है। वह अपनी स्वार्थ की पूर्ति के लिए भयानक अस्त्रों-शस्त्रों के निर्माण की होड़ लगाए जा रहा है। मनुष्य विनाश के लिए अणुबम व परमाणु बम आदि बनाकर अपनी अपार शक्ति का परिचय दे रहा है। इससे अशांति एवं भयानक वातावरण निर्माण हो रहा है। इसलिए विश्व बंधुत्व वर्तमान युग की माँग है। बच्चों को विश्व-बंधुत्व की शिक्षा देकर ही महात्मा गांधी जी के सपनों को साकार किया जा सकता है। विश्व में शांति की स्थापना हेतु विश्व बंधुत्व की अत्यंत जरूरत है। आज चारों ओर अशांति एवं वैमनस्य का वातावरण दिखाई दे रहा है। सर्वत्र आराजकता फैली हुई है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की सीमा पर आक्रमण करने के लिए तत्पर है। भारत पर आक्रमण करने के लिए ही कई देश तैयार हैं। वे सिर्फ अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह बहुत ही गलत बात है। इससे विश्व में अशांति फैलेगी। इसे रोकने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को विश्व बंधुत्व को अपनाना पड़ेगा। विश्व में शांति बनाए रखने के लिए इसकी बहुत जरूरत है।

विश्व बंधुत्व एक ऐसा मानवीय गुण है, जिसे अपनाने से सबका भला होगा। संस्कृत सुभाषित में कहा भी गया है:

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

(ii) **पालतू प्राणी की आत्मकथा** **7**

''ठहरिए, कहाँ जा रहे हो? तनिक रुककर मेरी कहानी सुनिए।

मैं हूँ तकदीर का मारा, बेचारा, वृद्ध जानवर। मैं एक अल्सेसिशयन प्रजाति का कुत्ता हूँ। मैं भारत में इटली से आया था। उस वक्त मैं बहुत छोटा था। दरअसल मुझे कुछ लोगों ने मेरे माँ-बाप से अलग कर भारत में बेचने के लिए भेजा था। जब मुझे भारत में लाया जा रहा था तब मैं बहुत दुखी था मुझे बार-बार अपने माता-पिता की याद आ रही थी; लेकिन मेरा दुखड़ा कौन सुनता?

प्राणियों की एक बड़ी दुकान में मुझे बेचने के लिए रखा गया। मेरी कीमत भी अधिक थी। हर दिन कई लोग आते व मुझे देखते रहते। एक दिन एक अमीर आदमी दुकान में आया और उसने मुझे खरीद लिया। वह मुझे अपने घर ले गया। उसका घर क्या था? बहुत ही बड़ा बंगला था उसका। उसके

घर में ढेर सारे नौकर थे। मेरे लिए एक अलग कमरे की व्यवस्था की गई। उसका एक बेटा था। वह मुझे देखकर बहुत ही खुश हुआ और मेरे साथ खेलने लगा। जल्द ही हम दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन गए। आहिस्ता-आहिस्ता मैं अपने माता-पिता को भूल गया और उस संपन्न घर में बड़े ही आराम से रहने लगा।

समय अपनी अबाध गति से बीतता रहा। मैं बड़ा हो गया। मैं उनके घर की रखवाली करने लगा। मेरे होते हुए किसी की क्या मजाल कि कोई किसी चीज को छू ले। यहाँ तक कि घर के सारे नौकर भी मुझसे डरते थे। मेरे लिए खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी। दिन में चार बार मुझे खाने के लिए अच्छी-अच्छी चीजें दी जाती थीं। मैं भी भरपेट खाना खाता था और बंगले में चारों ओर स्वच्छंद विचरण करता रहता था। घर के सभी सदस्य मुझसे बहुत प्यार करते थे। मुझे ऐसा लगने लगा था कि मानो, मेरे मन की मुराद पूरी हो गई हो।

वृद्धावस्था से क्या कोई निजात पा सकता है? मैं भी वृद्ध हो गया। चलने-फिरने में असमर्थ हो गया। तब घर के सारे सदस्यों पर मैं बोझ बनने लगा। घर के लोग मुझे खाना तो देते थे, पर पहले जैसा प्यार नहीं करते थे; मुझे दुलारते नहीं थे। मैं बीमार रहने लगा। तब एक दिन घर के मालिक ने मुझे अपनी आलीशान कार में बिठाकर घर से दूर सड़क के एक किनारे छोड़ दिया। तब से मैं अकेला हो गया हूँ। अब मेरे पास जीवन जीने का कोई अर्थ नहीं रह गया है। यह इंसान कितना निर्दयी और स्वार्थी है। उसे जब अपना जी बहलाने के लिए किसी की जरूरत होती है; तब वह उसके लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हो जाता है और जब उसका जी भर जाता है, तब वह उस चीज को अपने जीवन से दूर कर देता है। क्या खूब! आखिर, यही होते हैं इंसान के जीवन के असली रंग। खैर कोई बात नहीं, जिस ईश्वर ने मुझे जन्म दिया है, आखिर वही मेरी हिफाजत करेगा।''

❖❖❖